विचार बिन्दु

चरित्र मनुष्य के अन्दर रहता है, यश उसके बाहर। –अज्ञात

आओ खेलें कृषि शिक्षा में एम.ओ.यू. का खेल

गुइयाँ हिंदी का शब्द है, जो भारत के तत्कालीन अवध और ब्रज के ग्रामीण परिवेश में बहुधा बोल जाता था। बचपन में मैं भी हम उम्र साथिओं के साथ खेलते समय गुइयाँ सम्बोधन अपने मित्रों के लिए करते था। होता यह था जब बच्चों का समूह बड़ा होता था तब कुछ बच्चे आयु के अंतर के कारण सामूहिक खेल से बिछुड जाते और जब ऐसे बच्चो की संख्या चार-पांच हो जाती तब वे कुछ सोच कर मित्रवत मिल कर कहते कि हम लोग अब गुइयाँ हैं, अलग खेलेंगे। इसलिए इसका अर्थ– फ्रेंड-फ्रेंड; सखी-सखी; अथवा मित्र-मित्र। चौंकिये नहीं, राजा साहब अवागढ सूर्य पाल सिंह अपने गढ में सखी समाज चलाते थे, जिसमे सभी पुरुष स्त्रिओं की पोशाक धारण कर हार व्यवहार स्त्रिओं की भांति ही करते। वैसे कोऑपरेशन का भी सिद्धांत यही है कि जब किसी अमुक स्थान पर लोग एक जैसी समस्या अथवा कठिनाई अनुभव करते हैं तब वे अपना समूह बना उस व्यवधान या कठिनाई को दूर करने का प्रयास करते हैं।

भारत में स्वतंत्रता के उपरांत जब शिक्षा का चहुमुखी विकास हुआ उस समय शिक्षण संस्थानों को अनेक प्रकार की समस्याएं सामने आई। शिक्षा की गुणवत्ता के लिए तब सरकारी स्तर और प्राइवेट स्तर पर अच्छे अध्यापक विभिन्न कक्षाओं की पढाई के लिए निर्माण करने के लिए स्थानीय स्तर पर टीचर ट्रेनिंग महाविद्यालय आरम्भ किये गए। याद रहे अच्छे टीचर का कोई अन्य विकल्प है ही नहीं, अच्छी पाठ्य पुस्तक भी नहीं।

प्रयासों में नार्मल टीचर, एल टी, बीएड, एमएड आदि कोर्स प्रोग्राम शुरू हुए वही विज्ञानं, प्रौद्योगिकी, तकनीकी और प्रोफेशनल विषय में उपयुक्त मानव संसाधन पैदा करने के लिए, कोर्स आरम्भ किये गए। टेक्निकल और प्रौद्योगिकी विषयों की पढाई सुद्रण करने के लिए कुछ विकसित देशों की सहायता भी ली गयी। इन प्रोग्रामों में टीसीएम, जो अमेरिका के साथ करार करके देश के कुछ महाविद्यालयों में शुरू हुआ, के अंतर्गत उच्च शिक्षा के लिए वांछित विषयों में देश के कतिपय युवा टीचर्स को उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेजा गया। इन टीचर्स के महाविद्यालय को भी अमेरिका से कुछ आवश्यक वैज्ञानिक उपकरण भी मिले ताकि ट्रेनिंग पाया टीचर वापिस आकर अपने कार्य को बिना किसी व्यवधान के कर सके। देश के अधिकांश प्रदेशों में कृषि विश्वविद्यालय आरम्भ होने पर उच्च स्तर पर प्रशिक्षण फिर आवश्यक हो गया जिसमे इंडो-अमेरिकन जॉइंट प्रोग्राम 'यूएसएड' के नाम से शुरू कर उच्च प्रशिक्षण की भी व्यवस्था हो गई, जो विघ्न रहित वर्ष 1970-71 तक चालू रहा तदुपरांत भारत सरकार ने कुछ राजनैतिक कारणों से प्रोग्राम बंद कर दिया। लेकिन दूसरी तरफ कुछ व्यक्ति अपने स्तरों पर धन व् अन्य संसाधन जुटा कर कई देशों में यथा ब्रिटैन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, नूज़ीलैण्ड, जापान आदि देशो से उच्च शिक्षा ग्रहण करने जाते रहे, जो शिथिलीकरण के पश्चात् अभी भी जारी है।

वास्तव में पहले काफी समय से ही फोर्ड फाउंडेशन, रॉकफेलर फाउंडेशन, कामनवेल्थ, जापान, डेनमार्क आदि अनेक देश पढाई के लिए वजीफा देकर भारत के वैज्ञानिको को सरकारी व् प्राइवेट स्तरों पर ज्ञान व् गुणवत्ता वृद्धि में सहयोग करते रहे हैं और अभी भी अनेक देश भारत के छात्रों को अपेक्षाकृत कम खर्च में साइंस, मेडिकल और तकनीकी क्षेत्रों में भरपूर सुविधाएँ दे रहे हैं। यूक्रेन रूस युद्ध के समय जब हजारों की संख्या में यूक्रेन से भारतीय छात्र निकाल देश वापिस लाये गए तब पता चला कि देश की कितनी बड़ी युवा संख्या विदेशों में अध्यनरत है। लानत है देश के कर्णधारों पर कि सभी युवाओं को रोजगार जनक विषयों में वांछित शिक्षा सुविधा आज़ादी के सात दसक बीत जाने पर भी देश में उपलब्ध नहीं हो सकी है। किस बात पर सरकार अपनी पींठ थपथपाती रही है और अमृत महोत्सव मनवाने का नाटकीय खेल खेल रही है। देश का युवा इस खेल को भली भांति समझ रहा है।

लानत है देश के कर्णधारों पर कि सभी युवाओं को रोजगार जनक विषयों में वांछित शिक्षा सुविधा आज़ादी के सात दसक बीत जाने पर भी देश में उपलब्ध नहीं हो सकी है। किस बात पर सरकार अपनी पींठ थपथपाती रही है और अमृत महोत्सव मनवाने का नाटकीय खेल खेल रही है। देश का युवा इस खेल को भली भांति समझ रहा है।

वर्तमान में जो कृषि विश्वविद्यालय प्रदेशों में स्थापित होकर वर्षों से कार्यरत हैं उनमे इंफ्रास्ट्रक्चर के लिहाज से बहुत संतोषजनक स्तिथि है प्रयोगशालाएं और उनमे सज्जित उपकरण किसी भी उन्नत विदेशी संस्थान की तुलना में आज कही अधिक अच्छे स्तर के मौजूद हैं। यदि कहीं कोई कमी है तो वह है उच्च शिक्षित व् प्रशिक्षित अनुभवी वैज्ञानिकों व् अध्यापकों की भयंकर कमी। लगभग दो दशकों से विषयों की पढाई ठेके (कॉन्ट्रैक्ट वो भी अधकचरा) पर हो रही है। प्रैक्टिकल का तो नामोनिशान नहीं। कृषि शिक्षा में प्रैक्टिकल की अहमियत से कोई समझौता कदापि नहीं होना चाहिए अन्यथा अधकचरी डिग्री लेकर युवा किसी प्राइवेट काम के भी नहीं। अध्यापन और अनुसन्धान के लिए तो वे अनपढ़ ही रहेंगे। अनुसन्धान और शिक्षा का तो बंटाधार हो चुका है पुनरुथान की सम्भावना अब बिलकुल नहीं।

परन्तु आश्चर्य की बात ये है कि भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, ऐक्रेडिटेशन कौंसिल, छात्र, स्वयं,और उनके अभिवावक जो पढाई के लिए खर्चा वहन करते हैं, किसी को भी सरोकार नहीं कि उनका वार्ड कैसी शिक्षा प्राप्त कर रहा है? विश्व विद्यालयों के कुछ महाविध्यालयों में स्तिथि विकराल है लेकिन राज्य सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन कुन्डलीमार बैठे हैं वहीँ अन्य मूक और लाचार हैं। प्रशासन में बैठे मंत्री, सचिव एवं उनके सहयोगिओं में इतनी काबिलियत नहीं कि वे शिक्षा की गाड़ी को पटरी पर ला सकें। और तीस वर्ष पूर्व के स्तर पर कर सकें। देश की जनता के टैक्स से अर्जित धन की ऐसी बर्बादी अन्य किसी देश में देखने को नहीं मिल सकती। अत: "गुइयाँ गुइयाँ खेल देश प्रदेश को मुबारक हो।"

आधुनिक वैज्ञानिक स्टेट ऑफ़ आर्ट कई अति मॉडर्न उपकरण जो बीस वर्ष पूर्व खरीदे गए, जंक खा कर भंगार बन रहे हैं या बन गए हैं। ऐसे लेटेस्ट उपकरणों को संचालित करने को कभी वांछित मानव संसाधन उपलब्ध ही नहीं हुआ। इस पक्ष को देखने वाला कोई नहीं। राज्य के मुख्य मंत्री अपनी कुर्सी पर खुश, उनके सचिव अपने दफ्तर में खुश, क्योंकि जो धन अध्यापकों के वेतन पर खर्च होता वह सब बच रहा है। मुख्य मंत्री उसे ऐसी किसी योजना पर डाइवर्ट कर सकते हैं जिससे उनकी पार्टी का वोट बैंक बढ़ता हो?

मुफ्त रेवड़ियां देना भी एक वर्तमान में प्रचलित खेल हो सकता है। जनता और छात्रों को यह एहसास कराया जाता है कि दोनों पक्ष इससे लाभान्वित होंगे? अब इसका कोई मॉनिटरिंग तो होती नहीं, किस पक्ष को क्या लाभ हुआ और कितना? यह कभी प्रचारित नहीं किया जाता। दोनों पक्षों की तरफ दशा एक सी ही होती है अब दूसरा पक्ष अन्यत्र दूर होने से वहां जाने से रहा पता करने। यह तथाकथित एमओयू दोनों पक्षों की नाजुक स्तिथि को छिपाने का एक नायाब तरीका है। परन्तु इस पूरे गुइयाँ खेल का कोई लूज़र है तो वह है छात्र। क्या कोई है उसकी परवाह करने वाला? गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा समय से उपलब्ध न होने के कारण उसका जीवन उद्देश्यहीन और दिशा हीन हो जाता है जिसकी बुराई जीवन पर्यन्त उसे भोगनी पड़ती है।

महाराणा प्रताप को पैदा कर राजस्थान ने तो एक कतिथ उनकी ढाल धारण कर ली है जो शताब्दिओं तक सरकार की मूढ़ता और निकम्मेपन को बचाने में काम आएगी। सरकार में विपक्ष नीरस, भ्रष्ट और भ्रमित है। सरकार की दोषपूर्ण कार्यों पर घेरने के लिए उसके पास कोई रचनात्मक योजना नहीं। अब तो किसी जयप्रकाश नारायण जी सरीखे व्यक्ति का उदय होना ही देश के युवाओं को संगठित कर सरकार को सही रास्ते चलने को विवश कर सकता है? काश यह शीघ्र संभव हो सके।

पाठकों को बताते चले कि एमओयू एक प्रकार का समझौता अथवा सहमति ज्ञापन होता है। शिक्षा के क्षेत्र में दो संस्थानों में जो पक्ष मजबूत होता है उसका लाभ दूसरे संस्थान को मिलता है यदि उसके यहाँ वह पक्ष कमजोर है। देश में टोप नॉच संस्थानों की कमी नहीं है परन्तु एमओयू करने के इक्षुक संस्थान को से डेटाबेस बनाकर पहले से रखना चाहिए ताकि जरूरत होने पर वांछित संस्थान या वैज्ञानिक से संपर्क कर एमओयू के लिए पहले मौखिक सहमति बनाने में सुगमता आउटसोर्सिंग हो सके। इस व्यवस्था से अपेक्षाकृत लाभ कम होता है।

प्रत्युत इवेंट मैनेजमेंट के माध्यम से उपयुक्त इसके वैज्ञानिक किसी कार्य को संपन्न करने के लिए कुछ समय के लिए निर्धारित शर्तों पर आमंत्रित कर लिया जाय तो शिक्षा उत्तम हो सकती है। संस्थान अनेक ऐसे विषयों के लिए ऐसा कर सकते हैं जिनके लिए उनके यहाँ वांछित संसाधन कमजोर हों या बिलकुल नहीं हों। अभी तो कुलपति ही अपने स्तर पर एमओयू प्रतिपादित कर लेते हैं और उसकी खबर समाचार पत्रों में छपने भेज देते हैं। इस प्रकार कुलपति सदैव खबरों में रहने के कारण कर्मशील व् क्रियाशील नज़र आते हैं।

राज्य सरकार तकनीकी और प्रोफेशनल शिक्षा में उदासीन रुख क्यों रखती है? कृषि शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों में शिक्षा गुणवत्ता के प्रति उदासीनता चरम पर है। यह समझ से परे है कि लाभार्थी की ऐसी दशा क्यों? छात्रों की उदासीनता का ही प्रभाव विश्वविद्यालय प्रशासन और राज्य सरकार को अधिक उदासीन, जवाबदेहि रहित, और अंतत: देश की भावी पीढ़ी की क्रियाशीलता व् सृजनात्मक्ता को कुंठित कर भविष्य के विकास में परमानेंट रोड़ा बन चुका/रहा है। उस पर शिक्षा में भ्रष्टाचार का समावेश भी गहरी पैंठ बना चुका है।

उपरोक्त लेख का संक्षिप्त सार अपने स्वयं के भविष्य पर सतत कुठाराघात होते छात्रों का स्वप्निल दशा में होना ही है।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर)

आठ पटवारियों के भरोसे चल रहे भिनाय के 48 पटवार मंडल

एक पटवारी पर पांच से अधिक पटवार मंडल का भार आ गया है

बान्दनवाड़ा, (निसं)। भिनाय तहसील में पटवारियों की कमी के चलते किसानों, काश्तकारों व आम जनता को नकल, जमाबंदी सहित अन्य जरूरी कार्यों के लिए इधर-उधर भटकना पड़ रहा है। पटवारियों की कमी से आमजन को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उनके कामों का समय पर निस्तारण नहीं हो पा रहा है।

राजस्व से संबंधित मामलों का निस्तारण करने वाली भिनाय तहसील क्षेत्र में 48 पटवार मंडलों में 48 पटवारी के पद सृजित हैं लेकिन लंबे समय से पटवारियों के 40 पद खाली पड़े होने के कारण 8 पटवारी ही 48 पटवार मंडलों का कार्य संभाल रहे हैं। वही भिनाय तहसील में 17 गिरदावर सर्किल में से मात्र 11 गिरदावर कार्यरत है। भिनाय पटवार मंडल में पटवारियों के 40 पद रिक्त होने के कारण एक पटवारी के कंधे पर 5 से अधिक पटवार मंडल का भार आ गया है। जिसका खामियाजा

■ **किसान और जनता नकल, जमाबंदी व अन्य जरूरी कार्यों के लिए भटक रही**

काश्तकारों को भुगतना पड़ रहा है। जानकारी के अभाव में काश्तकार जब पटवार घर पर पहुंचते हैं तो वहां उन्हें ताला मिलता है और पूछने पर पटवारी के अन्य पटवार मंडल में होने की बात पता चलती है।

भिनाय तहसील में तीन उप तहसील नागोला, देवलिया कला व बांदनवाड़ा होने के बावजूद भी अजमेर जिले में सबसे कम पटवारी भिनाय तहसील में है। वहीं राज्य सरकार द्वारा तहसील व उप तहसीलें स्वीकृत व संचालित तो करवा दी लेकिन पटवारी व कर्मचारियों के बिना आमजन की समस्या जस की तस बनी हुई है। इन उप तहसीलों में नायब तहसीलदार, बाबू, एलआरओ, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के पद शुरू से ही रिक्त चल रहे हैं। इन उप तहसीलों में मात्र पंजीयन का कार्य हो रहा है। भिनाय उपखंड के ठाामीणों के किसानो द्वारा लगातार जनप्रतिनिधियों से क्षेत्र में पटवारी की कमी को लेकर अवगत कराया गया पर स्थिति आज तक जस की तस बनी हुई है।

बिना मैडिकल डिग्री और रजिस्ट्रेशन के चल रहे क्लिनिक को चिकित्सा विभाग ने बंद करवाया

हनुमानगढ़, (निसं)। सम्पर्क पोर्टल पर प्राप्त हुई शिकायत के आधार पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के निरीक्षण दल ने आज जंक्शन स्थित जसलोक दवाखाना पर दबिश दी। दवाखाना को चला रहे संचालक के पास ना तो कोई मेडिकल डिग्री मिली और ना ही उसके दवाखाना का रजिस्ट्रेशन किया हुआ था। निरीक्षण दल में स्वास्थ्य निरीक्षण संत कुमार बिश्नोई एवं हनुमानगढ़ बीसीएमओ डॉ. ज्योति धींगड़ा ने जसलोक दवाखाना को बंद करवाया तथा संचालक को जरूरी दस्तावेज दिखाने एवं रजिस्ट्रेशन करवाने के उपरांत ही दवाखाना का संचालन करने के निर्देश दिए।

सीएमएचओ डॉ. नवनीत शर्मा ने बताया कि उन्हें जंक्शन स्थित जसलोक दवाखाना के संदर्भ में सम्पर्क पोर्टल पर एक शिकायत प्राप्त हुई। शिकायत प्राप्त होने के उपरांत स्वास्थ्य विभाग की टीम

हनुमानगढ़ बीसीएमओ डॉ. ज्योति धींगड़ा ने क्लिनिक को सीज करने की कार्रवाई की।

को जसलोक दवाखाना पर उपस्थित व्यक्ति ने बताया कि उसका नाम महेश कुमार झोजत है और वहीं दवाखाना का संचालन कर रहा है। दवाखाना के निरीक्षण में किसी भी प्रकार की एलोपैथी दवाई नहीं पाई गई। वहां पर केवल नाम मात्र आयुर्वेदिक दवाइयां एवं उसके खाली रेपर एवं बॉक्स पाए गए। संचालक द्वारा कुर्सी-मेज लगाकर

■ **सम्पर्क पोर्टल पर शिकायत मिलने के बाद जंक्शन के संचालित क्लिनिक पर की कार्यवाही**

क्लिनिक की तरह सजावट की गई थी। निरीक्षण दल ने जसलोक दवाखाना को तुरंत प्रभाव से बंद करवाया और संचालक को निर्देश दिए कि पर्याप्त दस्तावेज होने के बाद ही दवाखाना का संचालन किया जाए।

डॉ. नवनीत शर्मा ने कहा कि जिले में अनाधिकृत रूप से चल रहे अस्पताल एवं अवैध चिकित्सकीय कार्य कर रहे लोगों पर चिकित्सा विभाग द्वारा कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

बेटे और बहू ने वृद्ध पिता को घर से निकाला

डीडवाना, (निसं)। जिस मां-बाप ने बुढ़ापे की लाठी समझकर बेटे को पाल पोस कर बड़ा किया उसी बेटे ने बुढ़ापे में लाठी बनने की बजाय पिता को वृद्धावस्था में मारपीट कर घर के बाहर निकाल दिया। जिसकी वजह से वृद्ध पिता अब दर दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। यह कहानी है बुजुर्ग हेमराज की।

जिसने मात्र 9 साल की उम्र में ही मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार को पालना शुरू किया। बड़ा हुआ तो परिवार की जिम्मेदारियां निभाने के लिए अपनी पूरी जवानी मेहनत मजदूरी में निकाल दी। अपनी कमाई से ही परिवार के लिए गांव में जमीन लेकर खुद की कमाई से

डीडवाना एसडीएम जीतू कुलहरी के सामने न्याय की मांग करता वृद्ध।

मकान बनवाया। 4 पुत्र थे लेकिन दो की अकाल मृत्यु हो गई। अब दो बेटे हैं लेकिन बुढ़ापा अपनी कमाई से बनाए मकान में निकालने की ख्वाहिश से बेटे

■ **अन्य रिश्तेदारों और दूसरे बेटे को भी घर में नहीं आने दे रहे हैं**

के पास रहने की चाह की तो बेटे बहु ने घर के बिजली पानी के कनेक्शन कटवा दिए यहां पर भी बेटे बहु की सितम कम नहीं हुए बल्कि बुजुर्ग पिता को मारपीट कर घर से बेघर कर दिया और खुद ही मकान पर कब्जा कर बैठ गए। अब ना तो बेटे-बहु बुजुर्ग को घर में आने दे रहे हैं और ना ही अन्य रिश्तेदारों और दूसरे बेटे को घर में आने दे रहे हैं। मजबूरन बुजुर्ग हेमराज को अब बेटी के घर में आश्रय लेना पड़ रहा है। मारपीट और घर से निकलने के बाद बुजुर्ग हेमराज ने पुलिस को भी इसकी शिकायत की लेकिन पुलिस ने भी केवल एप्लीकेशन लेकर इतिश्री कर ली। तीन साल से दर दर की ठोकरें खा रहे बुजुर्ग ने बुधवार को डीडवाना उपखंड अधिकारी जीतू कुलहरी के सामने अपनी पीड़ा रखकर न्याय की मांग की। उपखंड अधिकारी जीतू कुलहरी ने बुजुर्ग हेमराज की पीड़ा सुनकर उनको न्याय का आश्वासन दिया वहीं इस मामले में मौलासर थाना पुलिस को भी जांच कर त्वरित रिपोर्ट देने के आदेश दिए हैं।

पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक का पावटा आगमन पर स्वागत

पावटा, (निसं)। जम्मू-कश्मीर से धारा 370 हटाने वाले व पश्चिमी बंगाल, गोवा व मेघालय के पूर्व राज्यपाल चौधरी सत्यपाल मलिक के बुधवार को पावटा प्रागपुरा नगरपालिका आगमन पर महेश सारण के नेतृत्व में युवाओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

युवा नेता रामकरण राठी ने बताया कि मलिक का दिल्ली से जयपुर जाते वक्त पावटा कस्बे में नवोदय कट पर जनप्रतिनिधियों, युवाओं, ग्रामीणों द्वारा भव्य स्वागत व अभिनंदन किया गया। राज्यपाल पद से कार्यकाल पूर्ण होने के बाद वे पुन: किसान राजनीति की ओर अपने कदम बढ़ा रहे हैं। इसी क्रम में उनका राजस्थान दौरा प्रस्तावित है। वहीं उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मैं मां के पेट से गवर्नर पैदा नहीं हुआ, मैं तो लडते-झगडते इस पद तक पहुंचा हूं। अगर एमएसपी पर सरकार ने

पावटा प्रागपुरा नगरपालिका में राज्यपाल मलिक का युवाओं ने स्वागत किया।

कानून नहीं बनाया तो मैं पूरी ताकत से आंदोलन में कूदूंगा और पूरा देश घूमूंगा। उन्होंने देशभर के किसानों को साथ लेकर बडा आंदोलन व एमएसपी का हक दिलाने की आवाज को बुलंद करने की बात कही। उन्होंने कहा कि मेरे पास कुछ

■ **'एमएसपी पर सरकार ने कानून नहीं बनाया तो मैं आंदोलन में कूदूंगा और पूरा देश घूमूंगा'**

नहीं है, इसलिए पंगा ले सकता हूं। देश की संपत्तियों पर कब्जा जमाने वालों के खिलाफ किसानों को भी एकजुट होना होगा। इसके साथ ही महिला शिक्षा को बढावा देने पर भी जोर दिया। कार्यक्रम में महेश सारण, विनोद पांछुडाला, रामकरण राठी, धीरज सारण, मनीष यादव, मनोज, गजराज, रोहित शर्मा, बलकेश चौधरी, प्रदीप बाज्या, पिंटू बाज्या, कैलाश जाट, विक्रम, अनिल यादव, रामसिह, महेश राठी, अनिल ओला, वेदप्रकाश, सरजीत सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

गुरूवार 17 नवम्बर, 2022

मार्गशीष मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2079, मघा नक्षत्र रात्रि 9:20 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 1:23 तक, कौलव करण प्रात: 7:57 तक, चन्द्रमा सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-वृश्चिक, गुरू-मीन, शुक्र-वृश्चिक, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज अष्टमी तिथि में वृद्धि हुई है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:12 तक, चर 10:52 से 12:12 तक, लाभ-अमृत 12:12 से 2:52 तक, शुभ 4:11 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:52, सूर्यास्त 5:32

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन व्यथित हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृष

परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी और आय में वृद्धि होगी। पारिवारिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

सिंह

घर-परिवार कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन प्राप्त होगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी और व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु

व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी और व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।